**पंचम अध्याय**

**उपसंहार**

**उपसंहार**

गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों के तुलनात्मक अध्ययन शोध परियोजना के रूप में कहा जा सकता है कि गुजरात और राजस्थान भौगोलिक द्रष्टि से भले ही भिन्न हो, परंतु उसके लोकगीतों में भावनात्मक, वैचारिक एवं सामाजिक रूप से ऐक्य है । जनमानस दोनों जगह समान रूप से एक है । दोनों प्रदेशों में लोक साहित्य की सभी विधाएँ संपुष्ट रूप में प्राप्त होती है । जिस प्रकार राजस्थान के लोकगीत सम्पूर्ण राजस्थान (मारवाड, मेवाड, हाडौती आदि) का प्रतिनिधित्व करते है, उसी प्रकार गुजरात के लोकगीत (दक्षिण गुजरात, उत्तर गुजरात, चरोतर, सौराष्ट्र, कच्छ) सम्पूर्ण गुजरात की सांस्कृतिक अस्मिता का वहन करते दिखाई देते है ।

हमने पाया कि लोकसंस्कृति को अभिव्यक्ति करनेवाले तत्व साहित्य और कला से संबंधित दोनों प्रदेशों में एक सा महत्व रखते है । राजस्थान की संस्कृति उच्च, महान एवं विशिष्ट है उसी तरह गुजरात जो कि संतो की पावन भूमि है । दोनों प्रदेशों की संस्कृति का परिचय देखना है तो उसके मैले, उत्सव आदि देखना चाहिए, हमने पाया कि जैसे पुष्कर के मेले में सरकारी आयोजन और विदेशी मेहमानों का ताता लगा रहता है वैसे ही गुजरात में तरणेतर के मेले में सरकारी आयोजन तथा विदेशी लोग और लोकपरंपरा में काफी एकरूपता है । अर्थात् दोनों प्रेदेशों की संस्कृति को मेले, उत्सव, पर्व में जीवंत रखनेवाले तत्व समान रूप से मोजूद है ।

लोकगीत, लोकसंगीत और लोकवाद्य आपसी पूरक हैं और परस्पर एक दूसरे से जूड़े हुए है । अध्ययन से यह पाया कि लोक संगीत का प्रभाव लोकगीत पर पड़ता है । और लोकगीत बिना संगीत और वाद्य के अधूरा-अपूर्ण है । इन लोकवाद्यों के उपयोग ने लोकगीतों में चार चाँद लगा दिए है । गुजरात औऱ राजस्थान दोनों प्रदेश लोकवाद्यों के संबंध में धनी व निपुण है । राजस्थान के जैसलमेर और गुजरात के कच्छ प्रदेश में मिलने वाले लोकवाद्यों में काफी समानता है । राजस्थान के वागड़ और चितोड़गढ़ के गरबे के शब्द थोड़े हेर फेर के साथ हूबहू गुजरात जैसे ही है । गुजरात के नर्मदा जिले के आदिवासियों के होली के अवसर पर चलने वाले घेर नृत्य-गीत परंपरा लगभग समान रूप से राजस्थान में भी उपलब्ध है । जैसे सब काम छोड़कर गुजरात के आदीवासी होली का पूरा महिना गाते है वेसे ही एक महिने तक राजस्थान में भी उसे मनाया जाता है । गुजरात के आज भीलों के साथ अन्य समाज में भी इसका प्रचलन बढ़ा है तो राजस्थान में भी अन्य जातियाँ भी 'गेर' बनाकर नाचती है । दोनों का स्वरुप एक जैसा है ।

गुजरात के खासकर सौराष्ट्र, दक्षिण गुजरात और कच्छ के लोकगीतों में वो फिर लोरियाँ, बालगीत, विवाहगीत, श्रमगीत, ऋतुगीत हो या पर्व उत्सव के गीत सब में समुद्र का जिक्र आता ही रहा है । जबकि राजस्थानी लोकगीतों में समुद्र का वर्णन नहीं के बराबर है । इसका एक मुख्य कारण यह भी है कि राजस्थान की भौगोलिक सीमा के साथ समुद्र नहीं है जबकि गुजरात को 1600 किलोमीटर लम्बा समुद्र किनारा मिला है । अत: समुद्र गुजरातियों के जन जीवन का मुख्य हिस्सा है । कितनी ही जातियाँ गुजरात में ऐसी है जिनका जीवन समुद्र पर ही निर्भर है ।

गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों के तुलनात्मक अध्ययन के दौरान दोनों प्रदेशों की यात्रा में सबसे बड़ी असमानता यह दिखी की राजस्थान के बड़े बड़े नगर जो अत्यंत आधुनिकता लिए हुए है । जैसे जयपुर, उदयपुर, जोधपुर आदि शहरों में भी लोकगीतों और लोककथाओं मे रूचि लेनेवाली संस्थाएँ, विद्वद्डन, विविध जातियों द्वारा इनका संवर्धन हो रहा है, और उसके लिए निरंतर कार्यक्रम का आयोजन भी होता रहता है । बड़े शहरों में रहनेवाले लोग भी अपने सारे रीति-रिवाज के लोकपरंपरा को महत्व देते दिखाई पड़े । जबकि गुजरात में अगर हम सौराष्ट्र को छोड़ दे तो गुजरात के बड़े शहरों में लोकगीत एवम् लोककथाओं के लिए कोई खास वातावरण नहीं दिखाई देता ।

गुजरात के साबरकांठा की ईडरिया मेवाडा ब्राह्मणों की जाति, उत्तर गुजरात के चौधरी, खेडब्रह्मा के आदिवासी माने जाने वाले भील, गरासिया आदि के घरेलू बोल-चाल के शब्द, लग्न आदि की कितनी ही रीति-रिवाजों, उनके गीतों और कथाओं का संबंध राजस्थान के साथ है । रामदेव पीर की जो पाट उपासना और रुपांदे-मालदे की पूजन विधि (रेल) राजस्थान में है, वही गुजरात (सौराष्ट्र) की अनेक जातियों में है । इनमें केवल उपासना पद्धति ही समान हो, इतना ही नहीं, संत वाणी व भजनों की कितनी ही पंक्तियाँ व कड़ियाँ भी एक समान है ।

इसी प्रकार दोनों क्षेत्रो के लोकगीतों में ग्राम्य मुहावरों तथा ग्राम्य लोकोक्तियों का प्रयोग सहज ढंग से हुआ है । वास्तविकता यह है कि मुहावरे लोकोक्तियों लोक से संपृक्त ही नहीं लोककी संपत्ति भी हैं । अत: लोकाभिव्यक्ति में इनका प्रयोग अनायास हुआ है ।

अध्ययन के दौरान यह भी मालूम हुआ की मारवाड़ राजस्थान के भाट-चारण गत सदी तक कच्छ में स्थित ब्रजभाषा की पाठशाला में डिंगल-पिंगल का अध्ययन करने आते थे । इनमें से कितने आज गुजरात में स्थायी रूप से बस गये है ।

सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक जीवन तथा परम्पराओं की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है । भाषा संस्कृति का अविभिन्न तत्व है और सांस्कृतिक जीवन की अभिव्यक्ति का संप्रेपण का मुख्य माध्यम है । लोकभाषा के संदर्भ में यह बात और भी खरी उतरती है । लोकबोली स्थानीय प्रभाव के साथ समाज की विशेषताओं और भावों को आत्मसात करती है । क्षेत्र विशेष के लोकगीत क्षेत्रीय बोली के माध्यम से सांस्कृतिक, सामाजिक परम्पराओं को व्यक्त करते हैं । इनके द्वारा उनका पूर्ण परिचय सहज ही मिल सकता है ।

भावों की सहजता व्यक्तित्व की अप्रधानता, मौखिक परंपरा लयात्मकता, सपाट अभिव्यक्ति लोकगीतों की प्रमुख विशेषताएँ हैं । लोकगीतों की भावधारा को हम वेदों, उपनिषदों और पौराणिक साहित्य में भी देख सकते हैं । लोकगीतों की परम्परा सुदीर्घ कालीन होती है ।

भारत में धर्म, प्रदेश, भाषा आदि का वैविध्य देखने को मिलता है । विविधता के बावजूद भी भारतीय परिवेष में एक्य परिलक्षित होता है । यह एकता सांस्कृतिक परंपराओं की समानता के कारण है ।

गुजरात और राजस्थान दोनों प्रदेशों के भूगोल, प्राकृतिक संपंदाओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि दानों प्रदेशों में साम्य है । ऐतिहासिक अध्ययन से विदित होता है कि कुछ जातियों का संबंध दोनों क्षेत्रों से रहा है । भारतीय आर्य भाषाओं के आदिर्भाव से स्पष्ट होता है कि गुजराती और राजस्थानी बोलियाँ शौरसेनी के नागर अपभ्रंश से निकली है । उपर्युक्त भौगोलिक और ऐतिहासिक समानता के कारण इन दोनों प्रदेशों के लोकगीतों की भावधारा में काफी समानता दिखाई देती है । गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों के इस तुलनात्मक अध्ययन में लोकगीतों में व्यक्त भावनाओं का विश्लेषण किया गया है । हर क्षेत्र की भाषा ऐतिहासिक परिवेश तथा भौगोलिक स्थिति अलग होती है । तथापि हिन्दू धर्म और उसके द्वारा निर्धारित संस्कारों से पूरा राष्ट्र भावनाओं के आधार पर परस्पर जुड़ा है ।

धर्म, राष्ट्र और सांस्कृतिक परिवेश से सम्प्रक्त इन दोनों क्षेत्रों के लोकगीतों में पर्याप्त समानता प्रतीत होती है । हिन्दू धर्म के निर्दिष्त संस्कारों में श्रद्धा रखने के कारण दोनों क्षेत्रों के लोकगीतों में समान विश्वास और आस्था व्यक्त होती है । यदि कहीं किंचित भिन्नता है तो इसलिए कि दोनों क्षेत्रों में समान रुप से है । इन लोकगीतों में व्यंग-कटाक्ष की शैली भिन्न होते हुए भी नीति, आदर्श और नवचेतन की भाव धारा में काफी साम्य दिखयाई देता है ।

सांस्कृतिक मूल्यों के द्वारा लोकगीतों में जो अभिव्यक्ति हुई है वह दोनों क्षेत्रों में समान है । उदाहरार्थ विवाह संस्कार को ही लिया जाय । गुजरात हो या राजस्थान या अन्य कोई क्षेत्र विवाह पध्धति में समानता है ।

लोक साहित्य में विेशेषत: लोकगीतों के भाव सामान्य जगत तक सीमित कहते हैं । लोक और परलोक की मान्यताएँ इनमें समान रुप से उभरती है । इन दोनों प्रदेशों के लोकगीतों में वर्णन प्रक्रिया समान है । जहां कहीं भी इनमें परिवर्तन दिखाई दिया है उसका मूल कारण स्थानीय परम्पराएँ हैं । इन्हीं कारणों से दो अलग-अलग क्षेत्रों के लोकगीत अपना पृथक स्वरूप स्थापित कर पाते हैं ।

लोकगीत अपनी स्थानीय परम्पराओं के कारण प्रादेशिकता की छाप लिए हुए होते हैं । फिर भी गुजराती और राजस्थानी पूजागीत, व्रत अनुष्ठान के गीतों में पर्याप्त साम्य दिखाई देता है । इस आधार पर यह प्रतीत होता है कि समग्र भारत में एक समय वैदिक परंपरा रही होगी और उसकी छाप हर क्षेत्र के साहित्य पर पड़ी होगी ।

संस्कार परक लोकगीत सामान्यत रामकृष्ण, गणेश, राधाकृष्ण, शिव-पार्वती आदि पर आधारित है । इन गीतों के पात्र पौराणिक होते हुए भी वर्तमान लौकिक पात्रों से संबंध होते हैं । इस प्रकार के लोकगीत दोनों क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में मिलते हैं । इसके साथ-साथ शिव, ब्रह्मा माता आदि प्रचलित देवी-देवताओं की स्तुति एवं पूजन प्रक्रिया में भी काफी समानता दिखाई देती है ।

लोक परंपराओं में वृक्ष पूजा का विशेष महत्व रहा है । कुछ वृक्षों, फलों एवं फूलों को लोकमान्यता के आधार पर पवित्र माना जाता है । हवनादि क्रियाओं में इनकी लकड़ियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं, साथ ही इन वृक्षों का पूजन भी किया जाता है । इन वृक्षों में बरगद, नारियल, पीपल, आंक, केला, बेर, तुलसी, फलदार वृक्ष तथा फूलों का समावेश होता है । इन पर आधारित लोकगीत भी मिलते हैं । दोनों क्षेत्रों में वृक्ष पूजन परंपरा आज भी विधमान है ।

धार्मिक सम्प्रदायों के अन्तर्गत विविध धार्मिक सम्प्रदायों का लोक समाज पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है । वैष्णव सम्प्रदाय, शैव सम्प्रदाय, शाकत सम्प्रदाय, भागवत सम्प्रदाय, निर्गुण सम्प्रदाय आदि का प्रभाव दोनों क्षेत्रों के लोकगीतों पर दिखाई पड़ता है । ये लोकगीत लोक परंपराओं तथा विश्वासों मे साथ जुडकर नवीन रूप में प्रस्तुत हुए हैं । वास्तव में धर्म तत्व ही लोकाभिव्यक्ति को अधिकाधिक प्रभावित करता है ।

पारिवारिक गठन के फल स्वरूप भी अभिव्यक्ति समान प्रतीत होती है । भारतीय परिवेश में आज भी संयुक्त परिवार की प्रणालिका विधमान है तथा इसका सामाजिक स्वरूप सर्वत्र समान हैं । विविध पारिवारिक संबंध होने से इन विषयों पर आधारित लोकगीतों में समान अभिव्यक्ति हुई है । इसी प्रकार सामाजिक परिवेश पृथक होने पर भी लोक मान्यताएँ कहीं-कहीं समान प्रतीत होती हैं ।

भारतीय दर्शन को प्रभाव समग्र समाज पर पड़ा है । इसीलिए लोकगीतों में ईश्वर, जीव, मृत्यु आदि विषयों पर उत्कृष्ठ अभिव्यक्ति सहज रूप में हुई हैं । लोकगीत गुजरात के हों अथवा राजस्थान के इन विषयों पर आधारित अभिव्यक्ति समान भावधारा को प्रस्तुत करती है ।

दोनों ही प्रदेशों की समान भावधारा में सहजता स्वाभाविकता एवं भाव सबलता पर्याप्त मात्रा में है । लोकगीतों के आधार पर प्रवेशगत रीति-रिवाज, अन्धविश्वासों, धार्मिक विचारों और क्रियाओं का पूर्ण विश्लेषण हो सकता है । इन अंधविश्वासों और रीतिरिवाजों में अपने-अपने प्रवेश की संस्कृति को प्रभावित किया है । शास्त्रीय मानदण्डों से परे रहते हुए भी दोनों क्षेत्रों के लोकगीतों में लय, ........का निर्वाह हुआ है । सामाजिक परम्पराओं और लोक विश्वासों में कुछ भिन्नता होते हुए भी भावों के चित्रण में समानता दिखाई पड़ती है ।

व्यंग्य और कटाक्ष की शैली का दोनों प्रदेश के लोकगीतों में प्रयोग हुआ है यद्यपि व्यंग्य के कथन की शैली में भिन्नता स्वाभाविक है । अपने अपने प्रदेश के मुहावरे और लोकोक्तियों से ये लोकगीत भरपूर हैं इस मामले में राजस्थान और सौराष्ट्र के गीतों में काफी साम्यता दिखती है । बिम्ब और प्रतीक योजना ने दोनों ही क्षेत्रों के लोकगीतों को भावपूर्ण अर्थव्यंजक बना दिया है ।

गुजराती तथा राजस्थानी लोकगीतों के विषय वस्तु, कथ्य, जीवन-दर्शन, अभिव्यक्ति, शिल्य आदि की समानता के कई कारम हैं । भौगोलिक ऐतिहासिक साम्य की चर्चा पहले ही कर चुके हैं, बोलियों के उद्गम ने भी इस समानता में योग दिया है । दोनों क्षेत्रों की सांस्कृतिक एकता और भारतीय जीवन-दर्शन की समानता के कारण मेरा यह निश्चत् विचार है कि ये लोकगीत दो भिन्न भिन्न भाषा संरचना के साथ जुड़े होने पर भी एक ही आत्मा और एक ही मूल तत्व को व्यक्त करते हैं ।

गुजरात व राजस्थान के लोकगीतों में समानता दिखाई देती है वहीं किंचिद् भिन्नता भी दिखाई देती है यह भिन्नता भाषा, भौगोलिक क्षेत्र एवं ऐतिहासिक स्थितियों के कारण उत्पन्न हुई है साथ ही हर क्षेत्र की अपनी परम्पराएँ होती हैं और यथास्थान उनका मुखर हो जाना सहज है ।

भारतीय संस्कृति सामाजिक संस्कृति है । जीवन के हर परिवेश में इसका प्रतिबिम्ब पड़ता है । सामान्यतया स्थानीय विशेषताओं, ऐतिहासिक एवं भौगोलिक आधारों पर दोनों क्षेत्रों को अलग-अलग देखा जा सकता है, परन्तु धार्मिक मान्यताओं, संस्कारों एवं राष्ट्रीय भावधारा के आधार पर इन्हें अलग नहीं किया जा सकता ।

उपर्युक्त तुलनात्मक अध्ययन विश्लेषण कई महत्वपूर्ण दिशाओं की ओर संकेत करता है। भारतीय संस्कृति के संरक्षण और लोक जीवन के सातत्य के लिए भारत के लोकगीतों का अध्ययन विश्लेषण अत्यन्त श्लाध्य है क्योंकि इससे भारतीय संस्कृति की मूल विशेषता "विविधता में एकता" परिपुष्ट होती है । लोकगीत लोकजीवन का सजीव प्रतिबिम्ब होने के कारण हमारी मूल्यवान विरासत हैं । इनका संचयन, संरक्षण अत्यन्त आवश्यक है । भावात्मक एकता और राष्ट्रीय एकता की दिशा में भी तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी दिशा निर्देश करते हैं । इन व्यापक संदर्भो में ही प्रस्तुत तुलनात्मक अध्ययन पर विचार किया जा सकता है । अस्तु ।